बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकार

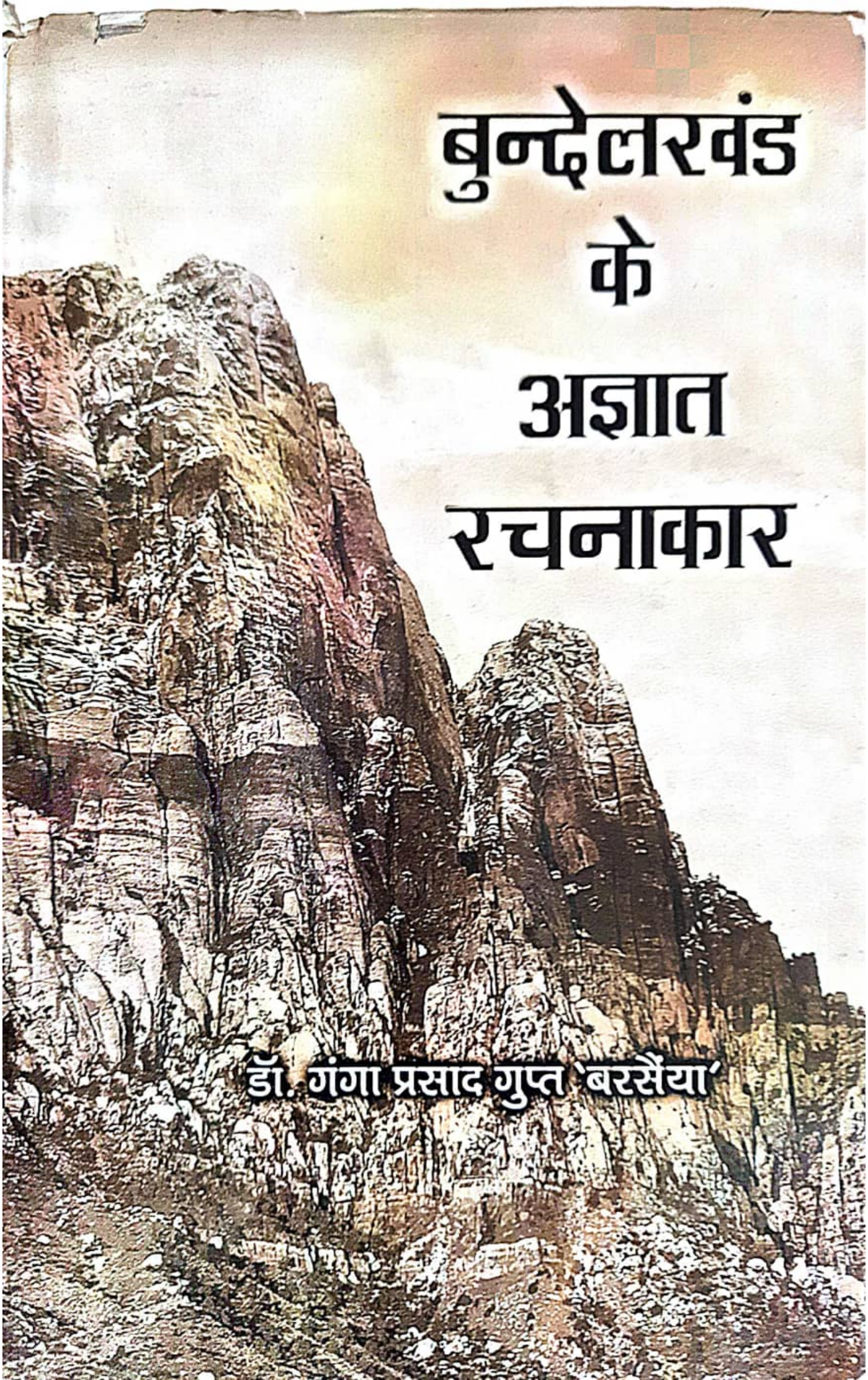

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकार

मध्यकालीन साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया द्वारा लिखित "बुंदेलखंड के अज्ञात रचनाकार" एक नवोपलब्ध कृति है जिसमें ऐसे-ऐसे कवियों की कृतियों एवं उनके जीवन के संबंध में प्रथम बार तथ्यात्मक विवरण दिये गये हैं जिनसे हम पहले परिचित नहीं थे। रामकृष्ण चौबे, ज्ञानी कवि, विक्रम कवि, चैनदास, हरिदास हरिजन, परमानन्द दास, वृन्दावन दास, कमल कुंवरि आदि इसी प्रकार के हैं। ग्रंथ की महत्ता का अनुमान इसी आधार पर लगाया जा सकता है कि डॉ. बरसैंया ने विद्वानों की पूर्व मान्यताओं पर जहां एक ओर पुनः विचार करने के लिये प्रेरित किया है, वहीं बहुत सी अमुद्रित सामग्री को नवीन आलोक में परखने और समझने का पूर्ण प्रयास किया है। इस दृष्टि से पूर्व विवेचित और सर्वथा मौलिक दोनों प्रकार की सामग्री के विनियोग से निश्चय ही ग्रंथ में चार चाँद लग गये हैं।

विषय का वैज्ञानिक विश्लेषण, विश्लेषण-विवेचन में **बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकार** में आद्यांत अवरेखी जा सकती है।

मूल्य : 320.00 रुपये

ISBN: 81-86480-89-7

बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकार

लेखक
डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

सहयोगी
उदय शंकर दुबे

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नईदिल्ली-110 049

ISBN 81-86480-89-7

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
संस्करण : 2002

प्रकाशक
सार्थक प्रकाशन
100ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली-110 049
☎ : 656 73 17

लेज़र कम्पोजिंग
सिटी कम्प्यूटर्स
गंगा विहार, दिल्ली-110 094

मुद्रक
वालाजी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

मूल्य : तीन सौ बीस रुपए

Bundelkhand ke Agyat Rachanakar
(Research work on un Known writers)
by Dr. Ganga Prasad Barsaiyan

Price : 320.00

अनुक्रम

बुन्देलखंड का साहित्य : शोध की दिशायें	15
कवि विक्रम और उनका सुदामा चरित्र	20
सर्वधर्म समभाव प्रस्तोता : संत निपट निरंजन	31
बुन्देल विभूति स्वामी श्री भगवत रसिक जी	38
सुखदेव बड़ेरिया और उनकी वणिकप्रिया	48
बुन्देलखंड की अज्ञात प्रतिभा रामकृष्ण चौबे	53
ईसवी खान	61
कवि ज्ञानी और उनका वीरविलास	63
कवि चैनदास और उनका साहित्य	75
जैन कवि देवीदास का जीवन और कृतित्व	94
बुन्देलखंडी कवि गुसाईं तुलसीदास	98
राय शिवप्रसाद	103
माधव सिंह	109
हिन्दू-मुसलिम एकता के सूत्रधार संतकवि ऐनसाईं	111
कृष्णायन के रचयिता कवि जगन्नाथ	118
जवाहर दास की साहित्य सेवा	121
शृंगार सागर के रचयिता मोहनलाल मिश्र : समय और साहित्य	125
कवि भोज और उनका साहित्य	144
बल्लभदास	155
हिम्मत बहादुर नरेन्द्र गिरि उपनाम 'रंग कवि'	157
हीरालाल व्यास 'हृदेश' और 'विस्वबसकरन'	163
कवि हरिदास 'हरिजन'	167
गदाधर भट्ट	174
महाकाव्यकार वृन्दावनदास और उनका साहित्य	182
बुधजन	195
बुन्देलखंड की मीरा : रानी कमल कुंवरि	197
शालिहोत्रकार मदन सिंह	204

परमानन्द सुहाने की साहित्य सेवा 207
परमानंद प्रधान और उनका साहित्य 213
बुन्देलीत्रयी के लोक कवि ख्यालीराम 226
कृष्ण चन्द्रिका के रचयिता ठाकुर रूपसिंह 232
बुन्देलखंड के रस सिद्ध कवि मंचित 240
कविवर चतुर्भुज आचार्य 'चतुरेश' 245
महात्मा शिवगिरि 249
भूषण और मतिराम भाई नहीं थे—कुछ नये तथ्य 252
दूलह नाम के एक नहीं—दो कवि थे 261
काव्य परम्परा की आठ पीढ़ियाँ 268
ओरछा दरबार के कवि 273
कवि बोधा के पूर्वज भी कवि थे—नये तथ्य 281
बुन्देलखंड के कुछ कवि और उनकी सनदें 284
छत्रसाल के आश्रित कवि 295
बुन्देलखंड के कुछ अल्पज्ञात क़वि 297
दीवान प्रतिपाल सिंह द्वारा दी गई बुन्देलखंड के रचनाकारों की सूची 308
गौरीशंकर द्विवेदी द्वारा दी गई बुन्देलखंड के रचनाकारों की सूची 325

दो शब्द

श्री गंगाप्रसाद बरसैंया ने बुन्देलखण्ड की ऐसी प्रतिभाओं के बारे में महत्वपूर्ण सूचनायें संकलित की हैं जिनके बारे में जानकारी या तो नहीं के बराबर है और है तो ठीक-ठीक नहीं। मैंने जब इनकी पुस्तक पढ़ी तो मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण लगी। कई उल्लेखनीय सूचनायें इस ग्रंथ में मिलती हैं। उदाहरण के लिये ज्ञानी जी का रायसो। यह 442 छंदों का ग्रंथ है और उसकी पांडुलिपि 300 वर्ष पुरानी हैं उन्होंने आल्हा की कथा दोहों, छन्दों और कुंडलियों में रची है और जगनिक के बारे में महत्वपूर्ण सूचनायें दी हैं। इसी प्रकार चाचा हितवृन्दावन से पृथक वृन्दावनदास की रामचरितावली के बारे में सूचना। इसी तरह लाला परमानन्द की प्रमोद रामायण, नीति सारावली, राजपुत्र संग्रह, मंजुल रामायण जैसे ग्रंथों की सूचना दी है जो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की हैं कवि विक्रम की सुदामा चरित (संवत् 1664 में रची) बुन्देली भाषा में रची गई है। दूसरे प्रकाश में लाये जाने वाले कवि हैं चैनदास जिन्होंने 18वीं शताब्दी के अंत में "रस विलास" की रचना की और 19वीं शताब्दी के अंत में कवि परमानन्द सुहाने के बारे में महत्वपूर्ण सूचना मिलती है जिन्होंने कई संग्रह तैयार किये। नखशिख हजारा, षटऋतु हजारा, राधिका–कृष्ण हिंडोरा, होलिका दहन फागोत्सव, सर्वसार संग्रह, पावस कवित्त रत्नाकर, कवित्त हजारा, गोपीप्रेम पयोध आदि।

अपने शोध के द्वारा बरसैंया जी ने यह सिद्ध किया है कि कवि मोहनलाल मिश्र 17वीं शताब्दी के न होकर 19वीं शताब्दी के थे और उनकी रचनायें उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत की हैं। उन्होंने अन्यत्र यह भी प्रतिपादित किया है कि दूलह नाम के दो कवि थे। दूलह त्रिवेदी तो भलीभांति ज्ञात हैं, पर दूलह राय श्रीमद् भगवद्गीता के पद्यानुवाद के रचयिता का परिचय लोगों को कम है। ये 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में पैदा हुये सुज्ञात दूलह त्रिवेदी से पहले हुये थे। उन्होंने भूषण और मतिराम के सहोदरी संबंधों का भी खण्डन किया है। खण्डन का आधार यह है कि यदि माने कि मतिराम नाम के दो कवि थे। एक तो भूषण के भाई थे और तिकवांपुर के निवासी थे, दूसरे बनपुरा के रहने वाले वत्सल गोत्रीय त्रिपाठी थे। इन्होंने "छंदसार" की रचना की तो कुछ कठिनाइयां सामने आती हैं। बनपुरा गांव महाराज मधुकरशाह ओरछा नरेश द्वारा पंडित चक्रमणि को जागीर के रूप में दिया गया था। उन्होंने यह भी सिद्ध किया है कि दो की कल्पना करना उचित नहीं है। मतिराम एक ही हैं और ये वत्सल गोत्रीय हैं। कवि बोधा के बारे में जो नई जानकारी दी गई है वह यह कि बोधा महाराज छत्रसाल के आश्रित कवि बिन्द के वंशज

थे और नाथ कवि के छः पुत्रों में से एक थे। बोधा शाहगढ़ के राजा खेतसिंह के आश्रित थे। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के थे।

एक लेख में उन्होंने पन्ना राज ने जो सनदें कवियों को दी उनका विवरण दिया है। प्रसिद्ध कवि छत्रसाल के आश्रित लाल कवि को दी गई दो सनदों का विवरण दिया गया है। यह भी विवरण दिया गया है कि उनका नाम गोरेलाल नहीं था। उनका दूसरा ग्रंथ विष्णु विलास है जिसमें नायिका भेद बरवै छन्द में वर्णित है। धनुष पचासा में सीता स्वयंवर के छन्द हैं। एक महत्वपूर्ण सूचना उन्होंने बुन्देलखण्ड की रानी कंवलकुंवरि के बारे में दी है। वे संवत् 1800 विक्रमी में जनमी थीं। रानी कंवल कुंवरि ने राधावल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा ली थी और अपने इष्टदेव राधा को ही उद्दिष्ट करके उन्होंने बधाइयां लिखीं। उनकी एक रचना "तुलसी चरित" थी। काव्य के अच्छे उदाहरण इस परिचय ग्रंथ में दिये गये हैं जो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि बरसैंया जी ने अपने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के द्वारा एक ऐतिहासिक वृत्ति की पूर्ति की है और उत्तर मध्यकाल के बारे में ऐसी नई रचनायें जोड़ी हैं जिनका साहित्य इतिहासों में उल्लेख नहीं के बराबर है। मैं इसके लिये उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं और यह आशीर्वाद देता हूं कि वे इसी प्रकार अनुशीलन में प्रवृत्त रहें। उन्हें इन कवियों की रचनाओं का संकलन भी करने की बात सोचनी चाहिये जिसके द्वारा यह रेखांकित किया जा सके कि बुन्देलखण्ड के कवियों ने अपनी भाषा को बुन्देली के संस्पर्श से बहुत सरस और जीवंत बनाया है।

दिनांक 23-4-2001

—डॉ. विद्यानिवास मिश्र

आमुख

बुंदेलखण्ड की धरती जहां अपने सांस्कृतिक भंडागारों के ऋण से हमें मुक्त नहीं कर सकी है, वहीं यहां के कवि-कोविदों के प्रभूत वांगमय हमारी विगत और साम्प्रतिक गौरवमयी परम्पराओं की महत्वपूर्ण कड़ियों को जोड़कर हमें भारतीय चिन्तन और ज्ञान-राशि के बहुआयामी स्वरूप के द्वारा कृतकृत्य करते रहे हैं। वस्तुतः प्राचीन काव्य-साधना के केन्द्र स्थल बुंदेलखण्ड और ब्रजमण्डल ही अधिक चर्चित रहे हैं। ब्रज की सीमा का संस्पर्शन करने वाला बुंदेलखण्ड हिन्दी साहित्यकाश के नक्षत्र आचार्य कवि केशवदास के प्रखर पांडित्य सर्जना के कवि-कलाकार जितने बुंदेलखण्ड में रहे है, उतने ब्रजमण्डल में नहीं। सतसईकार बिहारीलाल ग्वालियर के बसुआ गोविन्दपुर के ही थे जिनकी तरुणाई मथुरा में बीती, क्योंकि मथुरा उनकी ससुराल थी। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि अधिकांश कवि बुंदेलखण्ड के राजाओं के आश्रित रहे हैं। इस संबंध में कई महत्वपूर्ण लेख और शोध-प्रबंध लिखे जा चुके हैं। कुछ समय पूर्व चरखारी के कन्हैया सिंह ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका के एक अंक में चरखारी-दरबार के कवियों की गवेषणात्मक सूचनाओं द्वारा हिन्दी-जगत को लाभ पहुँचाया था। बांदा से सागर प्रस्थान करने वाले रीतिकाल के अंतिम कवि पद्माकर भट्ट की महत्वपूर्ण जानकारी 'पद्माकर श्री' में पद्माकर वंशज डॉ. भालचन्द्रराव तैलग ने अपने अनुसंधान द्वारा प्रस्तुत की थी। पन्ना नरेश के दरबारी कवियों पर भी अनुसंधान कर्ताओं ने पर्याप्त काम किया है। इधर छतरपुर के अन्यान्य कवियों के साथ ईसुरी-गंगाधर पर भी शोध-कार्य हो चुका है। बिजावर नरेश के दरबारी कवि बिहारीलाल भट्ट कृत "साहित्य सागर" आधुनिक लक्षण ग्रंथों में अयोध्या नरेश ददुआ साहब के "रस कुसुमाकर" और जगन्नाथ भानु कृत "काव्य-प्रभाकर" से किसी भी रूप में कम महत्वपूर्ण नहीं है। फिर भी नव अनुसंधान की श्रृंखला उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। कुछ समय पहले झांसी के पं. गौरीशंकर द्विवेदी ने "बुंदेल-वैभव" के द्वारा बहुत से अज्ञात कवियों की नई जानकारी दी थी और "मिश्र बंधु विनोद" या "कविता-कौमुदी" से भिन्न बहुत से अपरिचित कुल गोत्र के कवियों को फिर से प्रतिष्ठित करने का स्तुस्य प्रयास किया था।

इसी श्रृंखला में मध्यकालीन साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया द्वारा लिखित "बुंदेलखण्ड के अज्ञात रचनाकार" एक नवोपलब्ध कृति है जिसमें ऐसे-ऐसे कवियों की कृतियों एवं उनके जीवन के संबंध में प्रथम बार तथ्यात्मक विवरण दिये गये हैं जिनसे हम पहले परिचित नहीं थे। रामकृष्ण चौबे, ज्ञानी कवि, विक्रम कवि, चैनदास, हरिदास हरिजन, परमानन्द दास, वृन्दावन दास, कमल कुंवरि आदि इसी प्रकार के हैं। ग्रंथ की महत्ता का अनुमान इसी आधार पर लगाया जा सकता है कि डॉ. बरसैंया ने विद्वानों की पूर्व मान्यताओं पर जहां एक ओर पुनः विचार करने के लिये प्रेरित किया है, वहीं बहुत सी अमुद्रित सामग्री को नवीन आलोक में परखने और समझने का पूर्ण प्रयास किया है। इस

दृष्टि से पूर्व विवेचित और सर्वथा मौलिक दोनों प्रकार की सामग्री के विनियोग से निश्चय ही ग्रंथ में चार चाँद लग गये हैं।

पूर्व विवेचित सामग्री के अन्तर्गत डॉ. बरसैया जी ने भूषण और मतिराम के सहोदरत्व पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिये हैं। वे अब बहुत आश्वस्त होकर घोषणा करते हैं कि भूषण और मतिराम सगे भाई नहीं थे। इसके पूर्व इस विवाद श्रृंखला में भगीरथ दीक्षित, भवानीशंकर याज्ञिक, पं. कृष्णबिहारी मिश्र बंधु और डॉ. किशोरीलाल गुप्त प्रभृति विद्वानों का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार डॉ. बरसैया ने दूलह राय और दूलह नामधारी दो कवियों का उल्लेख किया है, एक दूलह बनपुरा के थे और दूसरे दूलह ओरछा के थे। अभी यह तय नहीं हो सका था कि "कविकुलकंठाभरण" के कवि दूलह त्रिवेदी और बनीपारा के निवासी दूलहराय एक है या भिन्न। परन्तु अपने सारगर्भित अनुसंधान के द्वारा डॉ. बरसैया जी ने सिद्ध कर दिया है कि लक्षणकार त्रिवेदी दूलह और श्रीमद्भागवत के अनुवादक और ओरछा निवासी दूलहराय दोनों भिन्न हैं। इसी प्रकार मोहनलाल मिश्र के रचनाकाल के बारे में भी नई जानकारी दी गई है और पूर्व स्थापना का खंडन किया गया है।

इस ग्रंथ में डॉ. बरसैंया के कुछ पहले के लेख भी संकलित है जिनमें "कवि बोधा के पूर्वज भी कवि थे", "काव्य परम्परा की आठ पीढ़ियाँ" और "ओरछा दरबार के कवि" अतिशय महत्वपूर्ण लेख हैं। इधर नयी खोजों के आधार पर डॉ. बरसैंया ने "परमानन्द सुहाने की साहित्य-सेवा" पर विस्तृत और तथ्यपूर्ण जानकारी दी है। यद्यपि प्राचीनकाल के कवियों के बहुत से संग्रह-ग्रंथ निकल गये है, परन्तु सुहाने का यह संग्रह साहित्य के इतिहास में अनुसंधान होने पर एक नई श्रृंखला जोड़ सकता है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता। इस प्रकार का एक अच्छा संग्रह बुंदेलखण्ड के बलदेव कवि ने भी किया था जिसका नाम "सत्कविगिरा विलास" है और जो किसी समय ठाकुर शिवसिंह सरोज का आधार ग्रंथ रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है कि यह ग्रंथ अब सुना गया है कि मुद्रित हो रहा है। डॉ. बरसैंया ने इस ग्रंथ में ओरछा दरबार और महाराजा छत्रसाल द्वारा कवियों को दी गई सनदें, दीवान प्रतिपाल सिंह द्वारा दी गंई बुंदेलखण्ड के रचनाकारों की सूची तथा श्री गौरीशंकर द्विवेदी द्वारा दी गई बुंदेलखण्ड के रचनाकारों की सूची भी दी है जो निश्चय ही अनुसंनधायकों के बड़े काम की है।

निस्सन्देह तीन सौ पचास पृष्ठों का यह विशालकाय ग्रंथ मुद्रित होने पर बहुतों का नेत्रोन्मीलन करेगा और भारी मात्रा में व्याप्त भ्रांतियों के निराकरण में पग-पग पर सहायक सिद्ध होगा। अतः ऐसी अनुपम और मौलिक सर्जना के लिये डॉ. बरसैंया धन्यवादार्ह है और मुझे विश्वास है कि उनकी तरुण लेखनी कथमपि वार्धक्य का निमंत्रण स्वीकार न करेगी। इसके साथ ही मैं डॉ. बरसैया जी की साहित्यिक साधना की मंगलकामना करते हुए यह आशा करता हूँ कि वे अनवरत प्रगति की दिशा में आगे बढ़ते रहेंगे।

31.5.2001

—डॉ. किशोरीलाल
160, नैनी बाजार, इलाहाबाद

विनम्र निवेदन

बीसवीं शताब्दि की समाप्ति और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रवेश-द्वार पर हम खड़े हैं। वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण सारे विश्व को देखने-समेटने की क्षमता हमारी मुट्ठी में है। तब यह अत्यन्त दुखद है कि हिन्दी-साहित्य के अनेक समर्थ साधक सरस्वती पुत्र आज भी गुमनामी के अंधकार में दबे रहने का अभिशाप भोग रहे हैं। भौतिक साधनों की बढ़ोत्तरी हुई, शिक्षा का प्रसार हुआ, शिक्षालयों-शोधालयों में बड़े-बड़े विद्वानों की प्रतिष्ठा हुई, किन्तु इन बेचारों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। सुविधाभोगी जीवन के अभ्यस्त शोधार्थी और विद्वान सुखदायी कक्षों में बैठकर साहित्येतिहास ग्रंथों की रचना कर रहे हैं। उन्हें लिखी लिखाई जितनी सामग्री टेबिल पर मिल जाती है प्रायः उतने का ही उन्हें ज्ञान है और उतने का ही वे उपयोग कर पाते हैं। यही कारण है कि बुन्देलखंड जनपद के परमानन्द और वृन्दावन दास जैसे 30-30 ग्रंथों के रचयिता हिन्दी साहित्य के वृहद् इतिहास में स्थान नहीं पा सके। स्थान तो छोड़िये, नामोल्लेख तक नहीं है। आल्हा पर पहला ग्रंथ लिखने वाले 'वीर विलास' के रचयिता ज्ञानी कवि और हिन्दी बुन्देली का पहला 'सुदामा चरित्र' लिखने वाले विक्रम कवि बुन्देलखंड के ही थे, इसकी जानकारी किसी को नहीं है।

हिन्दी के इतिहास ग्रंथों का मूलाधार अभी भी पंडित रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास है। उसमें जो कुछ भी थोड़ी अभिवृद्धि हुई है उसका अधिकांश श्रेय नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद के अन्वेषण कर्मचारियों को है, जो थोड़ा वेतन पाकर, भूखे पेट रहकर भीषण गर्मी, बरसात और शीत में गांव-गांव, द्वार-द्वार गर्द-गुबार भरे रास्ते पारकर ग्रंथों तक पहुंचकर विवरण लेते रहे और यदि मिल गये तो ग्रंथ भी पहुंचाते रहे। इससे लाभ भी हुआ और हानि भी। लाभ यह कि विवरण और ग्रंथ सुरक्षित हो गये और हानि यह कि वे क्षेत्र अपनी कृतियों से वंचित हो गये। आवश्यकता पड़ने पर नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन शोधार्थियों-जिज्ञासुओं को अपेक्षित सामग्री, सूचनायें और सुविधायें उपलब्ध नहीं कराते।

उन पर अपना एकमात्र हक मानते हैं। इसका अनुभव मुझे अज्ञात रचनाकारों की खोज के दौरान हुआ। यह बड़ा कठिन और कष्टसाध्य कार्य है। ग्रंथ खोजना, उसे प्राप्त करना, उसका अध्ययन करना, फिर विवरण सहित छपवाना। नई पीढ़ी के साहित्यकार अतीत को निरर्थक मानते हैं। वे इसमें समय, शक्ति, साधन लगाना (बरबाद करना कहा जाता है) नहीं चाहते क्योंकि आज का युग वर्तमान पर केन्द्रित युग है। यह मानसिकता कितनी भयावह है, इसका परिणाम सामने आने लगा है जब हमारी इससे संबंधित जानकारी दिनोंदिन क्षीण होती जा रही है। विज्ञान की उपलब्धियां साहित्य के अतीत की वर्जना नहीं करतीं, वे ज्ञान का विस्तार करती हैं। साहित्य के विद्वान वैज्ञानिक भले ही न हों, पर वे वैज्ञानिक सोच के हामी होने का ढिंढोरा अवश्य पीटते हैं। इसीलिये अतीत की अज्ञात साहित्य सम्पदा नष्ट हो रही है। पहले इस विनाश के लिये अज्ञानी जिम्मेदार थे क्योंकि उन्हें ज्ञान नहीं था। अब ज्ञानी जिम्मेदार हैं क्योंकि वे जानकार होकर भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

मैं अपनी शोध की व्यथा-कथा बयान कर महानता का दिग्दर्शन नहीं करना चाहता लेकिन यह तय है कि इस गुमनाम सम्पदा को सुरक्षित करने में किसी की भी गहरी रुचि नहीं है। जो कुछ लोग इस दिशा में प्रयास भी कर रहे हैं उन्हें कहीं से प्रोत्साहन तक नहीं दिया जा रहा। ऊपर से कहा जाता है कि खंडहर खोदने से क्या लाभ, कुछ नया निर्माण करो। यह निरा एकांगी और तात्कालिक दृष्टि है। अब उन्हें कौन समझाये कि इन खंडहरों में कितने रत्न दबे पड़े हैं। आंख होकर भी न देखना कितनी बड़ी विडम्बना है। यह भी कि वर्तमान अतीत की नींव पर खड़ा होकर विस्तार पाता है।

भला हो स्व. श्री रघुनाथ शास्त्री और श्री उदयशंकर दुबे का, जिन्होंने सामग्री और जानकारी उपलब्ध कराने में मेरी उदारता से मदद की। इनके सहायोग से मेरी कठिनाइयां कम हुई। दोनों क्रमशः नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद से जुड़े रहे हैं और कई दशकों तक अन्वेषण का कार्य किया है। इनके सहयोग के बावजूद अनेक कड़ुवे अनुभव हुए। कटु अनुभव कराने में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों और साहित्य जगत के अनेक विद्वान भी शामिल हैं।

यह कृति मेरी बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकारों की खोज का कई वर्षों की शोध-साधना का सुफल है। इस ग्रंथ को तो आज से 15-20 वर्ष पूर्व ही प्रकाशित होना था, पर सुयोग न मिला। प्रकाशन का कार्य आज के व्यावसायिक युग में बड़ा कठिन है। इन रचनाकारों में अधिकांश को हिन्दी जगत की खुली हवा में पहली बार प्रस्तुत करने का प्रयास मैंने ही लेखों के माध्यम से किया था। जहां जितना मिला उसे प्रकाशित कराया

ताकि शोध की गाड़ी आगे बढ़े, किन्तु ऐसा एक भी रचनाकार के बारे में संभवतः नहीं हुआ। जब विद्वानों से चर्चा की तो वे विस्मित जरूर हुये और कार्य को आगे बढ़ाने की मुझे सलाह दी, सराहना की, और कुछ नहीं। इतना क्या कम है? मैं उनका कृतज्ञ हूं। यह अवश्य कहता हूं कि हमें सुखदायी कक्षों से बाहर निकलकर प्राचीन साहित्य की धरोहर की तलाश करनी चाहिए अन्यथा हम भी साधकों की उपेक्षा के दोषी होंगे। हमने बहुत-सा खो दिया है, जो बचा है उसे बचाया जाना चाहिये। जो बांचा नहीं गया, बस्तों में बंधा बिखरा है, उसे खोलकर बांचना चाहिए। अनुपयोगी, अयुगीन और अप्रासांगिक कहकर उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। इनमें कई कबीर, तुलसी, रहीम, घनानन्द, निराला, नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल हो सकते हैं।

वस्तुतः यह मेरे डी. लिट्. के शोध का विषय था। जब मैंने इस विषय पर स्व. डॉ. भगीरथ मिश्र और आदरणीय डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी से परामर्श किया तो वे बड़े प्रसन्न हुये। विषय की महत्ता प्रतिपादित करते हुये कार्य की सलाह दी। मैं यहां उनका सादर स्मरण करता हूं। इनसे सद्परामर्श पाकर मैंने इस दिशा में कदम बढ़ाये। परन्तु शासकीय सेवा के कुछ ऐसे व्यवधान हैं जिनसे बच पाना बहुत कठिन होता है। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा में मेरा डी. लिट्. उपाधि के लिये पंजीयन तो हो गया किन्तु तभी बुन्देलखंड से बाहर ऐसी जगह स्थानान्तरण हुआ जहां उस समय छोटे बच्चों तक की पुस्तकें, कपड़े और जूते भी बाहर से मंगवाना पड़ते थे। ऐसे में भला शोध कार्य कैसे होता? मैंने तत्कालीन उच्चशिक्षा मंत्री से शोध का कारण बताकर स्थानान्तरण निरस्त करने का निवेदन किया तो उनका उत्तर था—'सरकार ने आपसे शोध करने का कोई निवेदन तो नहीं किया। आप शोधकार्य बन्द कर दीजिये और स्थानान्तरित स्थान पर जाकर नौकरी कीजिये।' जहां शासनाधीशों का ऐसा सोच और मानसिकता हो वहां अकादमिक कार्य कैसे किये जा सकते हैं? फलतः डी. लिट्. का शोध कार्य जो रुका तो रुक ही गया। व्यथा से मन भी टूट गया। इस ग्रंथ में उसी शोध की सामग्री को संग्रहित किया गया है।

मेरे अग्रज और अभिन्न डॉ. किशोरीलाल मध्यकाल के अधिकारी विद्वान हैं उन्होंने निरन्तर मुझे प्रेरित किया, बिखरी शोध-सामग्री को व्यवस्थित कर प्रकाशित कराने का आग्रह किया। असहज को सहज बनाया। वस्तुतः वे इस कार्य के सच्चे परामर्शदाता हैं। उन्होंने आमुख लिखकर मुझ पर अनुग्रह किया है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। स्व. रघुनाथ शास्त्री को स्मरण कर प्रणाम करता हूं। श्री उदयशंकर दुबे मेरे सहयोगी प्रारंभ से रहे हैं। कई लेखों में उनका पूरा योगदान है। मैं उन्हें साधुवाद देता हूं।

स्व. दीवान प्रतिपाल सिंह ने अपने ग्रंथ 'बुन्देलखंड का इतिहास' प्रथम भाग में तथा स्व. गौरी शंकर द्विवेदी ने अपने ग्रंथ 'बुन्देल वैभव' भाग 1, 2, 3 में बुन्देलखंड के रचनाकारों की सूची दी हैं वे दोनों ग्रंथ अब लगभग अप्राप्य है। शोधार्थियों की सुविधा और साहित्यिक जिज्ञासुओं के लिए उन दोनों महानुभावों द्वारा दी गई सूची को इसमें इसलिये सम्मिलित किया गया है ताकि साहित्य जगत उन रचनाकारों को भी जान सके जो अभी सर्वज्ञात नहीं हैं। उन्होंने बड़े परिश्रम से वह सूची तैयार की होगी। उसमें इस क्षेत्र के अधिकांश रचनाकारों के नाम हैं। मैं उन दोनों महानुभावों को नमन करते हुए अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

पन्ना राज्य के राजकवि स्वर्गीय पंडित कृष्णदास ने बुन्देलखंड के साहित्य और इतिहास की खोज में बड़ा श्रम किया है। अनेक राज्यों के अभिलेखागारों से उन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रामाणिक सामग्री संकलित की है। मैंने उनके ग्रंथों की सामग्री का यथोचित उपयोग किया है। उस सामग्री से अनेक रचनाकारों के नये तथ्य उजागर हुये है जो आज तक अज्ञात या अल्पज्ञात थे। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूं। शिव सिंह सरोज, मिश्रबंधु विनोद, सरोज सर्वेक्षण, बुन्देल वैभव तथा रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य का इतिहास सहित अनेक इतिहास ग्रंथों एवं अन्यान्य कृतियों का भी उपयोग किया है। मैं इन सभी कृतिकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। स्थानीय मोतीलाल विधि महाविद्यालय के राजर्षि पुस्तकालय से भी मुझे सामग्री मिली है। मैं उनके व्यवस्थापकों के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य मानता हूं। एक लेख की सामग्री डॉ. आर. एन. शर्मा, झांसी के सौजन्य से प्राप्त हुई है तदर्थ उन्हें धन्यवाद देता हूं। जिनसे भी मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग और प्रोत्साहन मिला उन सबके प्रति मेरे मन में सम्मान भाव है। सभी की स्मृतियां मेरे मानस में हैं।

भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. विद्यानिवास जी मिश्र ने मेरे अनुरोध पर पुस्तक के संबंध में दो शब्द लिखकर उसे गरिमा प्रदान की है। इस अहेतु की कृपा के लिए मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

डॉ. कांति कुमार जैन, पूर्व आचार्य, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर का सहज आत्मीय स्नेह मुझे वर्षों से प्राप्त रहा है। उन्होंने कृति के सम्बन्ध में अपनी सम्मति स्वरूप दो शब्द लिखकर मुझ पर अनुग्रह किया है। वे मेरे आदरणीय हैं। उनके प्रति आभार व्यक्त करना औपचारिकता ही होगी। सार्थक प्रकाशन, दिल्ली के डॉ. कृष्णदेव शर्मा ने व्यावसायिक सोच-विचार के बिना इसे प्रकाशनार्थ स्वीकार किया। वे स्वयं विद्वान और जानकर व्यक्ति हैं। मैं उन्हें पूरे मन से धन्यवाद देता हूं। मेरे चिरंजीव

अभिलाष ने इस कृति की सामग्री व्यवस्थित करने व पांडुलिपि तैयार कराने में बड़ा श्रम किया है। यद्यपि यह उसका कर्त्तव्य है फिर भी उसे स्नेहाशीष न देना कृपणता होगी।

अंत में साहित्य-जगत के विद्वानों से निवेदन करना चाहता हूं कि इस ग्रंथ में बुन्देलखंड के तीन प्रकार के रचनाकारों की जानकारी दी गई है—1. जो सर्वथा अज्ञात हैं 2. जो अत्यन्त अल्पज्ञात हैं और 3. गलत ज्ञात अर्थात् जिनके बारे में गलत या भ्रमपूर्ण जानकारी साहित्य जगत में प्रचलित है। मेरे ज्ञान और सामर्थ्य की सीमायें हैं, साधन भी पर्याप्त नहीं हैं। सब कुछ एक कृति में समेटा जाना भी संभव नहीं है। फिर भी, यथा शक्ति मैंने अधिकाधिक प्रामाणिक सामग्री देने का प्रयास किया है। ग्रंथ में संग्रहित आलेख अलग-अलग समयों पर लिखे गये हैं। कई आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुये हैं। हो सकता है कुछ लेखों में थोड़ी-बहुत पुनरावृत्ति भी हो। अस्तु—इनमें कोई त्रुटि हो तो सुधारें और मुझे भी सूचित करने की कृपा करें। साथ ही यथासंभव इस दिशा में कार्य करने के लिये शोधार्थियों को भी प्रेरित करें। इससे मेरे इस कार्य को और सार्थकता मिलेगी। इस कृति को मैं अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धि मानता हूं किन्तु सही मूल्यांकन तो साहित्य जगत के विद्वान ही करेंगे। मुझे विश्वास है कि विद्वानों एवं शोधार्थियों को इससे संतुष्टि निश्चित ही होगी।

—डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म : 6 फरवरी, 1937

शिक्षा : एम. ए. पी-एच डी.

कृतियां : हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध प्रबंध), छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य-संदर्भ और प्रकृति, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, मानस मनीषा आदि उच्चकोटि की 20 पुस्तकें।
लगभग 220 शोध-परक निबंधों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।
12 शोध छात्रों में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त।
अब तक 20 लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत।
नव-ज्योति 'संज्ञा' व 'बन्धु' पत्रिकाओं का संपादन।
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, जीवाजी विश्वविद्यालय के पंजीकृत शोध-निर्देशक (परीक्षक आदि)।

सम्मान : साहित्य सम्मेलनों, नगरपालिकाओं, हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि द्वारा साहित्य श्री, तुलसी पुरस्कार, विद्रोही पुरस्कार, साहित्य भारती आदि पुरस्कारों से अलंकृत।

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049